सानंद गुडी पाडवा उत्सव में ऐतिहासिक संगीत मानापमान नाटक के सौ साल पहले हुए संयुक्त प्रयोग की कहानी बताई गई

गोष्ट संयुक्त मानापमानाची के अविस्मरणीय मंचन से अभिभूत हुए प्रेक्षक

इंदौर। रविवार शाम इंदौर के नाट्य संगीत प्रेमीयों को हमेशा याद रहेगी। सानंद गुड़ी पड़वा उत्सव के तहत गोष्ट संयुक्त मानापमानाची का अनूठा मंचन और किस्सागोई का प्रयोग किया गया। सौ साल पहले इस नाटक का संयुक्त प्रयोग हुआ था। वह क्यों हुआ कैसे हुआ और कितना सफल हुआ इसकी कहानी भी वर्तमान संदर्भ को जोड़कर बताई गई।

कुल मिलाकर यह बेहद अनूठा प्रयोग था जो लंबे समय तक याद रहेगा। दरअसल,पारंपरिक उत्सवों के माध्यम से संस्कृति के महत्व को अपनी श्रीमंत विरासत से नई पीढ़ी को अवगत कराने के उद्देश्य से संस्था यह आयोजन 23 वर्षो से करती आ रही है।सानंद न्यास के उपक्रम फुलोरा के तहत हुए गुड़ी पडवा उत्सव% में गोष्ट संयुक्त मानापमानाची का मंचन स्थानीय देवी अहिल्या विश्वविद्यालय सभागृह पर हुआ।

मराठी संगीत नाटक की 150 वर्ष से की पुरानी वैभवशाली परंपरा रही है।

इस वर्ष गुढी पडवा उत्सव में अभिराम भडकमकर लिखित एवं ऋषिकेश जोशी दिग्दर्शित नाटक %गोष्ट संयुक्त मानापमानाची% की प्रस्तुती हुई। इस संगीत नाटक ने स्वर्णिम युग की वैभवशाली परंपरा की याद दिलाई।

कार्यक्रम के मुख्य कलाकार थे आशीष नेवाळकर, ऋषिकेश वांबुरकर, ओमकार प्रभूगटे, अजिंक्य पोक्षें एवं अश्विनी जोशी।

अनूठा प्रयोग : संगीत मानापमान नाटक प्रसिद्ध साहित्यकार काका साहब खाडीलकर ने लिखा है। उस दौर में संगीत नाटकों का बोलबाला था। कई बार एक ही नाटक दो या तीन नाटक कंपनियां कर रही होती थी। संगीत मानापमान नाटक को भी बाल गंधर्व और केशव राव भोसले की कंपनियां एक ही समय पर अलग-अलग शहरों में मंचित करती थी। 1921 में महात्मा गांधी ने जनता से आह्वान किया कि लोकमान्य तिलक स्वराज फंड में धन एकत्रित किया जाए। ऐसे में बाल गंधर्व को लगा कि उनकी कंपनी ने भी नाटक का एक प्रयोग करके उसकी राशि तिलक स्वराज फंड में देनी चाहिए, लेकिन बाल गंधर्व की नाटक कंपनी घाटे में चल रही थी। ऐसे में उन्हें लगा कि उनकी नाटक कंपनी कितना पैसा दे सकेगी ? ऐसे में उन्हें विचार सूझा कि क्यों ना केशव राव भोसले की नाटक कंपनी के साथ मिलकर संयुक्त रूप से संगीत मानापमान नाटक का प्रयोग किया जाए। बाल गंधर्व इस संदर्भ में केशव राव से मिलते हैं। केशव राव बाल गंधर्व के प्रशंसक हैं। वो तुरंत प्रस्ताव स्वीकार कर लेते हैं। अब समस्या यह आती है कि नाटक के लेखक काका साहब खाडीलकर खुद इस प्रयोग का विरोध करते हैं। ऐसे में केशव राव भोंसले इस समस्या का हल निकालते हैं। यह वह जमाना था, जब सोना 15 रूपए तोला था, उस समय नाटक की टिकट मुश्किल से 1 या 2 रूपए होती थी। ऐसे में संयुक्त प्रयोग की टिकट दर 100 रूपए रखी जाती है। इसके बावजूद नाटक जबरदस्त रूप से हिट होता है। इस प्रयोग से उस समय 16,800 पर एकत्रित होते हैं, जिसे तिलक स्वराज फंड में दिया जाता है। इस पूरी कहानी को लेखक अभिराम भडकमकर और दिग्दर्शक ऋषिकेश जोशी ने पूरी कल्पनाशीलता और कुशलता से दिखाया है। प्रयोग के दूसरे हिस्से में मूल संगीत मानापमान नाटक को संपादित रूप में मंचित भी किया गया है।

सोहम पटवर्धन को सानंद युवा पुरस्कार : सानंद न्यास के अध्यक्ष जयंत भिसे एवं मानद् सचिव संजीव वावीकर ने बताया कि प्रारंभ में कार्यक्रम का शुभारंभ दक्षिण मध्यक्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपूर की निदेशक सौ. आस्था गोडबोले कार्लेकर ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर सानंद युवा पुरस्कार से अंडर-19 भारतीय कप्तान रहे सोहम पटवर्धन को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन सानंद मित्र कु. पूर्वी केळकर एवं अर्पित बापट ने किया। मानपत्र वाचन किया कु.वृष्टि संत ने, आभार प्रदर्शन किया सानंद के अध्यक्ष जयंत भिसे ने किया।

अपनी बात

– अनिल कुमार नाहर, 9109999906
270, जवाहर मार्ग, इन्दौर-452002

जब प्रदेश के सबसे बड़े प्रमुख शहर इन्दौर-भोपाल ही शासन प्रशासन से नही संभल रहे है, तब मेट्रोपॉलिटन क्षेत्र का गठन कैसे और कब तक हो पाएगा

वैसे ही इन्दौर-भोपाल की आबादी और क्षैत्रो का विस्तार-विकास फैलता जा रहा है। प्रदेश की सरकार और प्रशासनों से दो सबसे बड़े और प्रमुख शहर ही व्यवस्थित रूप से नहीं संभल रहे है। शहरों के आसपास संभाग और जिलो को कैसे संभाला जाएगा।

इन्दौर शहर के अलावा उज्जैन देवास और धार को मिलाकर विकसित करने की योजना बन रही है। इसी प्रकार दूसरा मेट्रोपॉलिटिन (महानगर) क्षेत्र भोपाल सिहोर रायसेन-विदिशा-ब्यावरा (राजगढ़) को मिलाकर विकसित करने की भी योजना बन रही है।

महानगर अगर महागनर का आकार दे भी दिया जाए तो उनकी सीमा और जनसंख्या चारो ओर से कूल इन्दौर महानगर मे 1 करोड़ और भोपाल महानगर मे करीब 75-80 लाख हो जाएगी।

ये उपरोक्त योजनाएं सफल रही तो अन्य बड़े शहर जबलपुर, ग्वालियर आदि को भी विस्तार और विकसितरूप मे करना पड़ेगा। वैसे भी पूर प्रदेश की आबादी 8-9 करोड़ के आस-पास हो चुकी है और भविष्य मे बढ़ भी सकती है।

इस प्रकार देश के बड़े राज्यों यूपी, बिहार के बाद म.प्र. भी हो जाएंगा। क्षेत्रफल का विस्तार विकास बढ़ने के साथ-साथ गरीबी, बेरोजगारी महंगाईयां भी दूर करना होगी, तब ही प्रदेश पूर्ण विकसित हो सकेगा।

प्रदेश का प्रमुख और महत्वपूर्ण नगर प्रशासन एवं आवासीय विभाग अगर मुख्यमंत्री जी अपने पास रखले तो बहुत अच्छा हो जाएंगा। जैसे आपने गृह विभाग रखा हुआ है।

प्रायवेट शिक्षा माफियाओं की फीस लेने पर अंकुश लगाया जाए

शासकीय प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों की संख्या बढ़ाने की मांग

इन्दौर, (ज्ञानी रायकवार)। शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने प्रायवेट स्कूल के संचालकों को अपनी गोद में बैठाकर शहर के अधिकांश प्रायमरी और माध्यमिक स्कूलों में ताले लगवा दिए। पूर्व शिक्षा अधिकारियों ने प्रायवेट स्कूलों के संचालकों को आंख बंद कर मान्यता दी इसका सीधा असर अधिकांश शासकीय स्कूल एक-एक करके बंद होते चले गए।

आज शहर के मध्य में नूतन और महाराजा शिवाजी राव स्कूल को जो ए से झेड तक की कक्षा लगती थी, वहां भी नाममात्र की कक्षा लग रही है। इसका एक प्रमुख कारण यह भी रहा कि प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल बंद होने से उनके शिक्षकों को घर बैठे वेतन दिया जाता रहा। शासकीय स्कूल बंद होने से वहां के स्कूली बच्चे प्रायवेट स्कूल में एडमिशन लेने लगे। प्रायवेट स्कूल वालों ने भी स्कूल में भर्ती होने वाले छात्रों से मनमाने तरीके से फीस देनी पड़ी। प्राथमिक और माध्यमिक स्स्कूल बंद हने से शासन ने भी शिक्षकों की भर्ती भी बंद कर दी। प्रायवेट स्कूलों को मान्यता देने के जो नियम थे उसको जिला शिक्षा अधिकारी ने हमेशा हमेशा के लिए ताले में बंद करवा दिए।

इससे मजबूर होकर मील क्षेत्र में रहवासियों को प्रायवेट स्कूल में बच्चों को भर्ती करवाना पड़ा। आज सभी मिलें बंद हो गई है। पालकों का रोजगार भी खत्म हो गया है। स्थानीय श्रमिकों को आधे वेतन पर वह भी 12 घंटे काम करना पड़ रहा है। बच्चों को पढ़ना परिवार की मजबूरी है इसलिए नर्सरी और केजी वन और सैकंड में भर्ती के समय ही 20 से 25 हजार लेकर एडमिशन दिया जाता है। शिक्षा विभाग के अधिकारी भी श्रमिकों से इतनी मोटी फीस लेकर एडमिशन लेने वाले स्स्कूलस'चालकों पर कोई कार्यवाही तक नहीं करते है।

शिक्षा विभाग को चाहिए की बंद प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों को फिर से चालू करवाया जाए ताकि गरीब वर्ग के बच्चों और उनके परिवार को आर्थिक संकट से राहत मिल सके। इसके लिए क्षेत्रीय पार्षद और विधायक भी शासन से गरीब बस्स्तियों में आंगनवाड़ी और प्राथमिक, माध्यमिक स्कूलों में छात्र छात्राओं को नि स्कूलों के माध्यम से शिक्षा उपलब्ध करवाई जाए और शिक्षा माफियाओं की मनमानी फीस पर प्रतिबंध लगाया जाए।

ग्लेशियर नहीं बचें तो संकट को कोई रोक नहीं सकता

इंदौर। जल ही जीवन है। जल है तो कल है। जल की एक - एक बूंद कीमती है। अत: कोई भी व्यक्ति जल को बर्बाद नही करे। जल के बिना जीवन नीरस है। भारत की संस्कृति जल को सहेजने की रहीं हैं। नदियों की पूजने की परम्परा हमारी सदियों पुरानी है। भविष्य में यदि तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो वह जल को लेकर होगा।

यह बात विश्व जल दिवस पर इंस्टिट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स इंदौर द्वारा एसजीएसआईटीएस में आयोजित सेमिनार में प्रदेश के जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट ने मुख्य अतिथि बतौर कहीं। सिलावट ने आगे कहा कि जल संरक्षण और जल संर्वधन में इंजिनियर्स की भूमिका महत्वपूर्ण है, जिसका वे ईमानदारी से पालन करे। यह जानकारी मीडिया प्रभारी प्रवीण जोशी ने दी। एसजीएसआईटीएस के डायरेक्टर प्रोफेसर (डॉ.) नीतेश पुरोहित ने कहा कि यदि हमें आने वाली पीढी के लिए जल बचाना है तो इसके लिए हमें अभी से प्रयास करना होंगे। जल को सहेजने में बांधो की भूमिका हमेशा महत्वपूर्ण रही है।

डॉ. सुनील चतुर्वेदी ने कहा कि पृथ्वी के घूमने की दर और उसके झुकाव में परिवर्तन की वजह से प्रकृति का संतुलन बिगड रहा हैं, जो चिंताजनक हैं। नदियाँ स्वयं अपना जीवन बनाती हैं, लेकिन हम नदियों से रेत निकालकर उसको असुरक्षित कर रहे हैं। भूजल स्तर दिनोंदिन गहराता जा रहा हैं। अशुद्ध पेयजल की वजह से हमारे बालों का झडना, उनका सफेद होना, पेट में गैस बनना, बर्तन पर पानी के निशान बनना आदि लक्षण बताते हैं कि भूमि से निकला जल कितना अशुद्ध हैं।

इंजीनिय 'एवं सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. राहुल बैनर्जी ने कहा कि हमारे यहां का ड्रेनेज सिस्टम गले की हड्डी बन चुका हैं। ड्रेनेज से निकला जल और बर्तन और कपडे धोने से निकला जल दोनों का ट्रीटमेंट एक साथ करना ठीक नही है। अशुद्ध जल का रियुज कम हो रहा हैं। इस पर ध्यान देने की जरुरत हैं। संस्था के अध्यक्ष इंजिनियर दिनेश शुक्ला ने कहा कि वर्ष 1993 से विश्व जल दिवस की शुरुआत हुई जिसका मक़सद जल को सहेजना और उसकी उपयोगिता को बढाना हैं। सेमिनार के संयोजक इंजिनियर अजय शंकर जोशी ने कहा कि सब नागरिको को जल सहज एवं सुगम मिले इसकी चिंता आज ही करना जरुरी हैं। नल से जल एक अच्छी व्यवस्था हैं। अगर हमारा जल प्रबंधन अच्छा होगा तो जल की कम से कम बर्बादी होगी। अतिथि स्वागत एस एल शर्मा, श्रीनिवास कुटुंबले और डॉ. दिनेश शुक्ला ने किया। यह आयोजन इंजीनियर टी एन कुटुंबले को सम्परित था। कार्यक्रम का संचालन इंजिनियर नेहा गुप्ता ने किया। आभार माना सचिव डॉ. रमेश चौहान ने।

राम भजनों के साथ नववर्ष की अगवानी

इन्दौर। हनुमान मंदिर फुटी कोठी पर विक्रम संवत 2082 की अगवानी श्रद्धालु भक्तों ने जयश्रीराम जयश्रीराम के भजनो के साथ की। श्रद्धालु भक्तों की मंडली में विष्णुप्रसादजी सोनी, श्रीशरण दुबे, गणपत गुप्ता, सांई भक्त कमल साबू, श्री धूतजी, राजकुमार उपाध्याय, श्री माहेश्वरीजी प्रमुख थे। सभी श्रद्धालुओं को धार्मिक पुस्तकों का निःशुल्क वितरण सांई भक्त कमल साबू ने किया। प्रसाद वितरण विष्णु सोनी ने किया। आभार श्रीशरण दुबे ने माना।

पालकी यात्रा की अगवानी की

इन्दौर। बाणगंगा क्षेत्र में निकली विश्व शांति सांई पालकी यात्रा की अगवानी जगह-जगह दीप जलाकर फटाखे फोड़कर की गई।

श्री प्रवीण आर्य, गौरव आर्य ने श्रीफल कलश के साथ सांई वंदना पूजन किया। विक्रम अवार्डी राधेश्याम आर्य, सांई भक्त कमल साबू, छोटू शुक्ला, बाबूभाई पंवार, चंपालाल पहलवान, श्रीमती गीता सोनी, भजन सम्राट गोपाल शर्मा एडवोकेट, पं. महेश शर्मा सहित हजारों श्रद्धालु पालकी के साथ चल रहे थे। पालकी यात्रा बाणगंगा से बलभीम व्यायामशाला होकर बदल के भट्टे, जयहिंद नगर, वृंदावन कालोनी होते हुए पूरे बाणगंगा क्षेत्र में घूमी। पिछले दस वर्षों से यह पालकी सांई भक्त सेवा समिति द्वारा रिटायर्ड डीएसपी राधेश्याम आर्य की अगुवाई में निकाली जाती है। पूरा बाणगंगा क्षेत्र सांईनाम से धुनी लोबान की खुशबू से, फटाखों, ढोलकों की गूंज से जगमगा रहा था। मानो क्षेत्र में दीपावली का उत्सव हो रहा हो। आभार राधेश्याम आर्य ने माना।

शासकीय दृष्टि एवं श्रवणबाधितार्थ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में प्रवेश की प्रक्रिया प्रारंभ

इन्दौर। सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा संचालित शासकीय दृष्टि एवं श्रवणबाधितार्थ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दिव्यांगजन आवासीय परिसर, संस्कृति रायल सिटी रोड़ तालाब के सामने राऊ में प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ हो गयी है।

इस संस्थान में शारीरिक दिव्यांग बालकों को जो 06 वर्ष एवं अधिक आयु समुह के हो, उन्हें नियमानुसार कक्षा 01ली से कक्षा 12वीं में शिक्षण हेतु प्रवेश दिया जायेगा। सत्र 2025-26 हेतु प्रवेश प्रारंभ हो गया है।

प्रवेश के लिए आवेदन के साथ शैक्षणिक योग्यता, अंतिम उत्तीर्ण कक्षा की अंकसूची की छायाप्रति, आय प्रमाण पत्र (तहसीलदार द्वारा जारी), दिव्यांगता का प्रमाण पत्र (कम से कम 40 प्रतिशत दिव्यांगता होना आवश्यक है), दिव्यांगता दर्शाते हुए 06 फोटो, मध्यप्रदेश के मूल निवासी का प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र (डिजिटल), आधार कार्ड, समग्र सामाजिक सुरक्षा आई.डी. (SSSM ID), यू.डी.आय.डी., बैंक खाता आधार से लिंक किया हुआ और जन्म प्रमाण पत्र आदि की छायाप्रति लगाना होंगी।

4 जोड़ी ट्रेनों के फेरे पुन: विस्तारित

इन्दौर। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा विशेष रूप से ग्रीष्मकाल के दौरान उनकी यात्रा मांग को पूरा करने के उद्देश्य से विशेष किराये पर 4 जोड़ी स्पेशल ट्रेनों के फेरे पुन- विस्तारित किए गए हैं। इन ट्रेनों का विवरण इस प्रकार है-

ट्रेन संख्या 09622 बांद्रा टर्मिनस-अजमेर साप्ताहिक स्पेशल को 30 जून, 2025 तक विस्तारित किया गया है। ट्रेन संख्या 09621 अजमेर-बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल को 29 जून, 2025 तक विस्तारित किया गया है। ट्रेन संख्या 09625 अजमेर दौंड साप्ताहिक स्पेशल को 26 जून, 2025 तक विस्तारित किया गया है। ट्रेन संख्या 09626 दौंड अजमेर साप्ताहिक स्पेशल को 27 जून, 2025 तक विस्तारित किया गया है। ट्रेन संख्या 09627 अजमेर सोलापुर साप्ताहिक स्पेशल को 25 जून, 2025 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 09628 सोलापुर अजमेर साप्ताहिक स्पेशल को 26 जून, 2025 तक विस्तारित किया गया है। ट्रेन संख्या 04715 बीकानेर साई नगर शिरडी साप्ताहिक स्पेशल को 28 जून, 2025 तक विस्तारित किया गया है। ट्रेन संख्या 04716 साई नगर शिरडी बीकानेर साप्ताहिक स्पेशल को 29 जून, 2025 तक विस्तारित किया गया है।

परिवर्तित मार्ग से चलने वाली ट्रेने :

30 अप्रैल, 2025 तक अजमेर से चलने वाली गाड़ी संख्या 09627 अजमेर सोलापुर स्पेशल वाया अजमेर-चंदेरिया-नीमच-रतलाम चलेगी। 24 अप्रैल, 2025 तक सोलापुर से चलने वाली गाड़ी संख्या 09628 सोलापुर अजमेर स्पेशल वाया रतलाम-नीमच-चंदेरिया-अजमेर चलेगी।

निपानिया में नववर्ष के साथ चेटीचंद का जश्न

निपानिया। सिंधी समुदाय ने बालाजी स्काईज़ सोसाइटी गेट पर नववर्ष के साथ चेटीचंद का जश्न मनाया। इस अवसर पर निपानिया की सभी सोसाइटियों के निवासी एकत्रित हुए और आरती समारोह में भाग लिया। इसके बाद प्रसाद वितरण किया गया, जिसमें सभी ने भाग लिया और प्रसाद ग्रहण किया।

इस कार्यक्रम के आयोजकों में श्री विनोद गुरुदासनी, सुनील चांडानी, मनीष बसंतानी, मनोज चाटलानी और सुनील चांडवानी ने विशेष योगदान दिया। उन्होंने आरती समारोह और प्रसाद वितरण किया, जिससे इस कार्यक्रम को सफल बनाया गया।